

Revised National Tuberculosis Control Programme (RNTCP) and National AIDS Control Programme (NACP) have been working together for strengthening TB/HIV collaborative activities aimed at reducing the burden of both TB and HIV in India. Substantial degree of progress in TB-HIV collaborative activities has been achieved, as reported by the author in this issue. Another article about the RNTCP success story in Sikkim is self motivating and highlights the importance of case detection and cure rate. Sincere, honest and dedicated effort in the programme implementation and management can contribute in changing the epidemiological scenario of tuberculosis in a difficult terrain hill state, as reported by the eminent authors from Sikkim. They have also emphasized about utmost determination required on part of programme workers towards sustaining good performance in case detection and cure rate, whereby the transmission of infection to the healthy individuals can be effectively checked besides preventing the development of MDR-TB.

Based on the report on mortality statistics due to Tuberculosis disease from the 'Medical Certification on Cause of Death 2006' survey conducted by the Chief Registrar of Births & Deaths and Directorate of Economics & Statistics, Bangalore, an attempt has been made to analyse tuberculosis mortality in Karnataka. Author has highlighted that tuberculosis disease stands at second place in killer list among all leading five groups of cause of death. Another article explores frequently asked questions by the patients on DOTS therapy and answers provided by DOTS providers.

Training activities at NTI continued during July-December 2008. Ninety six participants from eighteen states participated in RNTCP modular trainings of two weeks duration. In addition, thirty two participants from seven states of India underwent Laboratory related trainings. . During this period, WHO sponsored training/workshop/seminars were also held at NTI, where one hundred and fourteen delegates from India and abroad participated. Training & Supervisory activities also included other workshops held at NTI, participation & presentation of research papers by NTI faculty & staff besides participation in various other important meetings. The other features of this Bulletin cover various orientation trainings conducted at NTI for the medical / paramedical / undergraduates besides participation of faculty in other related activities conducted outside NTI.

This bulletin also provides the abstracts of TB related articles compiled from other Journals and a poem on TB ('Kshyarog') compiled by NTI staff members. A glimpse of NTI through News & Views column of this bulletin and valuable interaction with the visiting dignitaries are also included in this edition. A useful guideline to contributors of NTI Bulletin, with tips on preparation of manuscript, its format and other related features have also been provided in this issue. We wish our readers useful reading and hope their feedback will further enhance dissemination of knowledge besides building and strengthening our partnership in the fight against tuberculosis.

**Editor**

भारत में दोनों क्षय रोग तथा एच आई वी के बोझ को घटाने की दिशा में क्षय रोग/एच आई वी सहयोगात्मक क्रियाकलापों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से संशोधित राष्ट्रीय क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम (आरएनटीसीपी) एवं राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम (एनएसीपी) एक साथ कार्यरत हैं। लेखक द्वारा इस अंक में दी गई सूचना के अनुसार, क्षय रोग-एच आई वी सहयोगात्मक क्रियाकलापों में पर्याप्त प्रगति प्राप्त की गई है। सिक्किम में आरएनटीसीपी सफलता की कहानी के बारे में एक और लेख स्व प्रेरक है तथा मामला संसूचन व रोग शमन दर के महत्व को उजागर करता है। सिक्किम के प्रतिष्ठित लेखकों की रिपोर्टनुसार, कार्यक्रम कार्यान्वयन एवं प्रबंधन में निष्ठावान, सच्चे व समर्पित प्रयास से दुःष्कर पहाड़ी राज्य के क्षेत्र में क्षय रोग के जानपदिक रोग की दृश्यावली को बदलने में मदद मिल सकती है। मामला संसूचन एवं चिकित्सा दर में उत्तम निष्पादन को बनाए रखने की ओर कार्यक्रम कार्मिकों द्वारा दृढ़ संकल्प की आवश्यकता पर भी उन्होंने जोर दिया है, जिससे एमडीआर-क्षय रोग के विकास के निवारण के अलावा स्वस्थ व्यक्तियों में रोग के संक्रमण को भी प्रभावी ढंग से रोका जा सकता है।

जनन एवं मरण के मुख्य रजिस्ट्रार तथा अर्थिकी एवं सांख्यिकी निदेशालय, बेंगलूर द्वारा संचालित 'मरण के कारण संबंधी चिकित्सीय प्रमाण पत्र 2006' सर्वेक्षण से क्षय रोग के कारण हुई मर्त्यता के आंकड़े संबंधी रिपोर्ट के आधार पर, कर्नाटक में क्षय रोग मर्त्यता के विश्लेषण का प्रयास किया गया है। लेखक ने उजागर किया है कि मृत्यु के कारणों के सभी अग्रणी पाँच समूहों की मारक सूची में क्षय रोग दूसरे स्थान पर है। एक और लेख रोगियों द्वारा डीओटीएस चिकित्सा संबंधी अक्सर उठाए गए सवालों तथा डीओटीएस उपलब्धकर्ताओं द्वारा दिए गए उत्तरों को पेश करता है।

एनटीआई में जुलाई-दिसम्बर 2008 के दौरान प्रशिक्षण क्रियाकलाप जारी रहे। दो सप्ताहों की अवधि के आरएनटीसीपी माड्युलर प्रशिक्षणों में अठारह राज्यों से छियानब्बे प्रतिभागियों ने भाग लिया। साथ ही, भारत के सात राज्यों से बत्तीस प्रतिभागियों ने प्रयोगशाला संबंधी प्रशिक्षणों को प्राप्त किया। इस अवधि के दौरान, एनटीआई में डब्ल्यूएचओ द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण/कार्यशाला/संगोष्ठियों का भी आयोजन किया गया, जिनमें भारत तथा विदेश के एक सौ चौदह प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण व अधीक्षण क्रियाकलाप भी सम्मिलित हैं, एनटी आई में आयोजित अन्य कार्यशालाएँ, एनटीआई के संकाय तथा स्टाफ द्वारा विभिन्न अन्य महत्वपूर्ण बैठकों में भाग लेने के अलावा प्रतिभागिता व शोध लेखों की प्रस्तुति भी समाहित हैं। इस पत्रिका की अन्य विशिष्टताओं में शामिल हैं, चिकित्सीय/ अर्धचिकित्सीय/ स्नातकपूर्व छात्रों के लिए एनटीआई में संचालित विभिन्न अभिविन्यास प्रशिक्षणों के अलावा संकाय द्वारा एनटीआई के बाहर संचालित अन्य संबद्ध क्रियाकलापों में प्रतिभागिता।

अन्य पत्रिकाओं से संकलित क्षय रोग संबंधी लेखों के सार एवं क्षय रोग पर ('क्षय रोग') एनटीआई के स्टाफ द्वारा संकलित कविता भी यह पत्रिका पेश करती है। इस पत्रिका के समाचार एवं विचार स्तम्भ द्वारा एनटीआई की एक झलक और भेंट करते प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ अमूल्य अन्योन्यक्रिया भी इस अंक में समाहित हैं। एनटीआई बुलेटिन के योगदान कर्ताओं के लिए उपयोगी दिशानिर्देश, हस्तलिपि की तैयारी संबंधी हिदायतें, उसका प्रारूप एवं अन्य संबंधित विशिष्टताएँ भी इस अंक में पेश हैं। अपने पाठकों को हम उपयोगी पठन की कामना करते हैं एवं आशा करते हैं कि उनका पुनर्निवेश अन्यो के अनुभवों एवं ज्ञान के प्रसारण को और बढ़ाने के अलावा क्षय रोग के विरुद्ध हमारी साझेदारी को निर्मित करने एवं सशक्त बनाने में सहयोगी होगा।